REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2024

हिंदी साहित्य का डिजिटल अभिलेखीकरण: साहित्यिक विरासत, भाषाई संरक्षण और वैश्विक प्रसार

Dr. A. V. Nandaniya
Associate Professor,
Shri V. M. Mehta Muni. Arts & Commerce College, Jamnagar.

प्रस्तावना

साहित्य किसी भी समाज की सामूहिक स्मृति का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज होता है। किसी भाषा का साहित्य केवल कविताओं, कहानियों, उपन्यासों और नाटकों का संग्रह नहीं होता, बल्कि उसमें उस समाज की जीवन-पद्धति, सांस्कृतिक स्मृतियाँ, सामाजिक संघर्ष, राजनीतिक चेतना, लोकविश्वास और मानवीय संवेदनाएँ सुरक्षित रहती हैं। इसलिए साहित्य का संरक्षण केवल पुस्तकों को सुरक्षित रखने का कार्य नहीं है यह किसी समाज की सांस्कृतिक स्मृति को भविष्य तक पहुँचाने की प्रक्रिया भी है।

हिंदी साहित्य की परंपरा अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। भक्तिकाल से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य तक कविता, कथा, नाटक, निबंध, आलोचना, संस्मरण, आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत और पत्रकारिता के क्षेत्र में विपुल साहित्य का निर्माण हुआ है। इस साहित्य का एक बड़ा भाग मुद्रित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और पांडुलिपियों के रूप में विभिन्न पुस्तकालयों, अभिलेखागारों और निजी संग्रहों में सुरक्षित है। किंतु समय के साथ कागज का क्षरण, दुर्लभ पुस्तकों की सीमित प्रतियाँ, पुस्तकालयों तक सीमित पहुँच और संरक्षण की भौतिक कठिनाइयाँ साहित्यिक विरासत के सामने चुनौती उत्पन्न करती हैं।

इसी संदर्भ में **डिजिटल अभिलेखीकरण** अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

Walter Benjamin ने आधुनिक तकनीक और कलाकृति के संबंध पर विचार करते हुए यह संकेत दिया था कि पुनरुत्पादन की तकनीक किसी कलाकृति की सामाजिक उपलब्धता और उसके अनुभव को बदल सकती है [1]। डिजिटल तकनीक ने इस विचार को साहित्य के

क्षेत्र में एक नए स्तर पर पहुँचा दिया है। अब किसी पुस्तक की डिजिटल प्रति हजारों किलोमीटर दूर रहने वाले पाठक तक कुछ ही क्षणों में पहुँच सकती है।

इस प्रकार डिजिटल अभिलेखीकरण केवल संरक्षण की तकनीक नहीं है; यह साहित्य की **उपलब्धता, उपयोगिता, पाठकीयता और वैश्विक प्रसार** को पुनर्परिभाषित करने वाली प्रक्रिया है।

डिजिटल अभिलेखीकरण की अवधारणा

डिजिटल अभिलेखीकरण का सामान्य अर्थ किसी दस्तावेज, पुस्तक, पांडुलिपि, पत्रिका, चित्र, ध्वनि या अन्य सांस्कृतिक सामग्री को डिजिटल रूप में संरक्षित करना है। लेकिन साहित्यिक अभिलेखीकरण की प्रक्रिया केवल किसी पुस्तक को स्कैन करके PDF बना देने तक सीमित नहीं है।

एक प्रभावी डिजिटल अभिलेख के लिए सामग्री का डिजिटलीकरण, उचित file format, metadata, लेखक और प्रकाशन संबंधी विवरण, searchable text, preservation strategy तथा दीर्घकालीन digital access आवश्यक होते हैं।

Raymond Williams ने संस्कृति को केवल अतीत की स्थिर वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होने वाली सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखा था [2]। इस दृष्टि से साहित्यिक अभिलेखागार भी केवल अतीत को सुरक्षित रखने वाली संरचना नहीं है। वह भविष्य में साहित्य को पढ़ने, समझने और पुनर्व्याख्यायित करने का आधार बन सकता है।

जब किसी पुराने हिंदी ग्रंथ को डिजिटल रूप दिया जाता है, तो वह केवल सुरक्षित नहीं होता; वह नए पाठकों और शोधकर्ताओं के लिए फिर से उपलब्ध हो जाता है।
यही डिजिटल अभिलेखीकरण का सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पक्ष है।

हिंदी साहित्यिक विरासत का प्रश्न

हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा में अनेक ऐसे ग्रंथ, पत्रिकाएँ और दस्तावेज हैं जिनकी मुद्रित प्रतियाँ आज दुर्लभ हैं। अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ अपने समय में महत्वपूर्ण रही हैं लेकिन उनकी सभी प्रतियाँ वर्तमान में आसानी से उपलब्ध नहीं हैं।

पुरानी पत्रिकाएँ साहित्यिक इतिहास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत हैं क्योंकि उनमें केवल साहित्यिक रचनाएँ ही नहीं होतीं, बल्कि उस समय की साहित्यिक बहसें, संपादकीय टिप्पणियाँ, समीक्षाएँ और सामाजिक-सांस्कृतिक चिंतन भी दर्ज होता है।

यदि ऐसी सामग्री नष्ट हो जाए या शोधकर्ताओं की पहुँच से बाहर हो जाए, तो साहित्यिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी कमजोर हो सकता है।

डिजिटल अभिलेखीकरण इस संकट को कम करने का अवसर प्रदान करता है। Internet Archive जैसे डिजिटल संग्रहों ने दुनिया भर में पुस्तकों और अन्य दस्तावेजों को डिजिटल रूप में उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है [3]।

भारत में National Digital Library of India जैसी पहलों ने भी विभिन्न भाषाओं और विषयों से संबंधित डिजिटल शैक्षिक एवं साहित्यिक सामग्री तक पहुँच को व्यापक बनाने में योगदान दिया है [4]।

हिंदी साहित्य के लिए ऐसी पहलों का महत्व केवल वर्तमान पाठकों तक सीमित नहीं है। इनके माध्यम से आने वाली पीढ़ियाँ भी साहित्यिक विरासत तक पहुँच सकती हैं।

मुद्रित पुस्तक से डिजिटल पाठ तक

मुद्रित पुस्तक और डिजिटल पाठ में केवल माध्यम का अंतर नहीं है। डिजिटल पाठ साहित्य के साथ हमारे संबंध को भी बदलता है।

मुद्रित पुस्तक में पाठक सामान्यतः पृष्ठ-दर-पृष्ठ पढ़ता है। डिजिटल पाठ में वह किसी शब्द को खोज सकता है, विभिन्न संस्करणों की तुलना कर सकता है, पाठ को copy अथवा annotate कर सकता है और एक ही समय में विभिन्न डिजिटल स्रोतों से जुड़ सकता है।

Matthew Kirschenbaum ने डिजिटल साहित्यिक वस्तुओं के अध्ययन में डिजिटल माध्यम की भौतिकता और संरचना की ओर ध्यान आकर्षित किया है [5]। डिजिटल पाठ दिखाई भले ही स्क्रीन पर देता हो, लेकिन उसके पीछे file formats, storage systems, software और metadata जैसी अनेक तकनीकी संरचनाएँ कार्य करती हैं।

इसलिए डिजिटल अभिलेखीकरण का प्रश्न केवल "पुस्तक को डिजिटल बनाना" नहीं है। वास्तविक प्रश्न यह है कि **डिजिटल रूप में साहित्य को किस प्रकार संरक्षित, व्यवस्थित और भविष्य के लिए पठनीय रखा जाए।**

हिंदी साहित्य और OCR की चुनौती

हिंदी साहित्य के डिजिटल अभिलेखीकरण में Optical Character Recognition अर्थात OCR की भूमिका महत्वपूर्ण है। यदि किसी पुराने ग्रंथ को केवल image के रूप में scan किया जाता है, तो उसमें उपस्थित शब्दों को सामान्यतः computer search नहीं कर सकता। OCR

तकनीक image में दिखाई देने वाले अक्षरों को machine-readable text में बदलने का प्रयास करती है।

देवनागरी लिपि की संरचना के कारण हिंदी OCR में कई तकनीकी चुनौतियाँ आती हैं। मात्राएँ, संयुक्ताक्षर, विभिन्न मुद्रण-शैलियाँ और पुराने फॉन्ट OCR की शुद्धता को प्रभावित कर सकते हैं।

भारतीय भाषाओं के लिए computational tools विकसित करने की दिशा में Digital Humanities के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। Indian Poetics और अन्य भारतीय साहित्यिक परंपराओं को computational methods के माध्यम से समझने के प्रयास इस बात की संभावना दिखाते हैं कि डिजिटल तकनीक भारतीय भाषाओं के साहित्य-अध्ययन में उपयोगी भूमिका निभा सकती है [6]।

लेकिन OCR के बाद मानव-संपादन आवश्यक है। गलत OCR से किसी साहित्यिक पाठ का अर्थ बदल सकता है। इसलिए हिंदी साहित्य के डिजिटल अभिलेखीकरण में **technology + human proofreading** का संतुलन आवश्यक है।

डिजिटल अभिलेख और भाषाई संरक्षण

किसी भाषा का संरक्षण केवल उसके बोलने वालों की संख्या से निर्धारित नहीं होता। आधुनिक डिजिटल युग में यह भी महत्वपूर्ण है कि किसी भाषा के पास कितना डिजिटल corpus, digital literature, searchable content और language technology उपलब्ध है।

UNESCO ने डिजिटल युग में भाषाई विविधता और बहुभाषिकता के संरक्षण को महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दा माना है [7]। यदि किसी भाषा की डिजिटल उपस्थिति कमजोर है, तो भविष्य में उस भाषा के डिजिटल ज्ञान-संसाधनों तक पहुँच भी सीमित हो सकती है।

हिंदी के संदर्भ में यह प्रश्न और महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि हिंदी केवल एक मानकीकृत साहित्यिक भाषा नहीं है। उसके साथ अनेक बोलियाँ, क्षेत्रीय भाषिक रूप और लोक-अभिव्यक्तियाँ जुड़ी हुई हैं।

यदि डिजिटल अभिलेखीकरण केवल मानक हिंदी तक सीमित रहता है, तो हिंदी की व्यापक भाषिक-सांस्कृतिक विविधता का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं हो पाएगा।

इसलिए डिजिटल अभिलेखीकरण में साहित्य के साथ लोकसाहित्य, क्षेत्रीय साहित्य, बोलियों की सामग्री, मौखिक इतिहास और विभिन्न सामाजिक समूहों की साहित्यिक अभिव्यक्तियों को भी स्थान देना आवश्यक है।

साहित्यिक स्मृति और डिजिटल अभिलेख

साहित्यिक अभिलेख केवल पुराने पाठों का संग्रह नहीं होते; वे समाज की स्मृति को संरक्षित करते हैं।

Jan Assmann ने सांस्कृतिक स्मृति की अवधारणा के माध्यम से यह समझने में सहायता की कि समाज अपनी पहचान और अतीत को विभिन्न सांस्कृतिक माध्यमों के द्वारा सुरक्षित रखता है [8]।

हिंदी साहित्य के डिजिटल अभिलेखों को भी इसी दृष्टि से देखा जा सकता है। किसी पुराने उपन्यास, कविता, पत्रिका या लेखक के पत्रों को डिजिटल रूप में सुरक्षित करना केवल शोध-सुविधा नहीं है; यह सांस्कृतिक स्मृति के संरक्षण का कार्य भी है।

उदाहरण के लिए किसी लेखक की प्रकाशित रचनाओं के साथ उसके पत्र, डायरी, हस्तलिखित पृष्ठ, साक्षात्कार और समकालीन समीक्षाएँ भी डिजिटल रूप में संरक्षित हों, तो भविष्य का शोधकर्ता उस लेखक को अधिक व्यापक संदर्भ में समझ सकता है।

इसलिए डिजिटल अभिलेखीकरण को साहित्यिक इतिहास के पुनर्निर्माण का आधार भी माना जा सकता है।

डिजिटल अभिलेख और साहित्यिक शोध

डिजिटल अभिलेखीकरण ने साहित्यिक शोध की संभावनाओं को भी व्यापक बनाया है।

जब हजारों साहित्यिक ग्रंथ डिजिटल रूप में उपलब्ध होते हैं, तब शोधकर्ता केवल कुछ चुनी हुई पुस्तकों तक सीमित नहीं रहता। वह बड़े corpus का अध्ययन कर सकता है। किसी शब्द की आवृत्ति, किसी विषय की उपस्थिति, विभिन्न कालों में भाषा के परिवर्तन अथवा किसी लेखक की शब्दावली का तुलनात्मक अध्ययन computational tools की सहायता से किया जा सकता है।

इसे Digital Humanities के व्यापक विकास से जोड़ा जा सकता है। भारत में Digital Humanities और Electronic Literature के क्षेत्र में कार्य अभी विकासशील अवस्था में है, लेकिन यह भारतीय भाषाओं के साहित्य के अध्ययन के लिए नई संभावनाएँ प्रस्तुत कर रहा है [9]।

हिंदी साहित्य के संदर्भ में भविष्य में ऐसे अनेक अध्ययन संभव हैं जिनमें प्रेमचंद से लेकर समकालीन साहित्य तक की भाषा, विषय-वस्तु, सामाजिक संदर्भ और शब्दावली का बड़े डिजिटल corpus के आधार पर अध्ययन किया जा सके।

इस प्रकार डिजिटल अभिलेखीकरण साहित्यिक शोध की आधारभूत संरचना को मजबूत कर सकता है।

डिजिटल अभिलेख और वैश्विक प्रसार

हिंदी साहित्य के डिजिटल अभिलेखीकरण का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम उसकी वैश्विक पहुँच हो सकता है।

किसी पुस्तक का मुद्रित संस्करण किसी दूसरे देश में उपलब्ध न हो, लेकिन यदि उसका वैध डिजिटल संस्करण किसी विश्वसनीय digital library में उपलब्ध है, तो दुनिया के किसी भी हिस्से में रहने वाला पाठक उसे पढ़ सकता है।

इससे हिंदी साहित्य विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों और प्रवासी समुदायों से आगे बढ़कर वैश्विक डिजिटल पाठक वर्ग तक पहुँच सकता है।

विशेष रूप से विदेशों में हिंदी का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए डिजिटल अभिलेख अत्यंत उपयोगी हो सकते हैं। वे भारत आए बिना प्राथमिक साहित्यिक स्रोतों तक पहुँच सकते हैं।

यह हिंदी साहित्य को विश्व साहित्य के व्यापक परिदृश्य में अधिक प्रभावी ढंग से स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

अनुवाद और डिजिटल वैश्वीकरण

हिंदी साहित्य के वैश्विक प्रसार के लिए केवल हिंदी में डिजिटल सामग्री उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं होगा। उसके लिए गुणवत्तापूर्ण अनुवाद भी आवश्यक है।

यदि हिंदी की महत्वपूर्ण रचनाएँ अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, रूसी, जापानी और अन्य भाषाओं में डिजिटल रूप से उपलब्ध हों, तो उनका वैश्विक पाठक वर्ग काफी बढ़ सकता है।

Digital technologies translation की प्रक्रिया को तेज कर सकती हैं, लेकिन साहित्यिक अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भ और भावात्मक सूक्ष्मताओं को बनाए रखना आवश्यक है। UNESCO ने भाषा-प्रौद्योगिकी को बहुभाषी डिजिटल संसार के विकास और भाषाई विविधता के संरक्षण से जोड़ा है [7]।

इसलिए हिंदी साहित्य के डिजिटल वैश्वीकरण में मशीन translation सहायक साधन हो सकता है, लेकिन साहित्यिक गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए मानवीय अनुवादक और संपादक की भूमिका महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

डिजिटल अभिलेखीकरण और कॉपीराइट

डिजिटल अभिलेखीकरण के साथ कॉपीराइट का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है।

हर पुस्तक को केवल इसलिए इंटरनेट पर उपलब्ध नहीं कराया जा सकता कि वह साहित्यिक या ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। लेखक, प्रकाशक और copyright holders के अधिकारों का सम्मान करना आवश्यक है।

दूसरी ओर, public domain में आने वाली रचनाओं को अधिक व्यापक रूप से डिजिटल रूप में उपलब्ध कराने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

इसलिए हिंदी साहित्य के डिजिटल अभिलेखागारों के लिए स्पष्ट copyright policies आवश्यक हैं। किस सामग्री को freely access किया जा सकता है, किसे केवल metadata के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है और किसके लिए अनुमति आवश्यक है—इन सभी प्रश्नों पर स्पष्ट व्यवस्था होनी चाहिए।

डिजिटल अभिलेखीकरण का उद्देश्य साहित्य को मुक्त करना है, लेकिन लेखक के अधिकारों की कीमत पर नहीं।

डिजिटल अभिलेख की विश्वसनीयता

डिजिटल सामग्री की उपलब्धता अपने आप में उसकी विश्वसनीयता की गारंटी नहीं है।

किसी पुराने ग्रंथ की scan copy यदि गलत edition से बनाई गई हो, OCR में अनेक त्रुटियाँ हों या metadata अधूरा हो, तो शोधकर्ता गलत निष्कर्ष तक पहुँच सकता है।

इसलिए डिजिटल साहित्यिक अभिलेखों में **प्रामाणिकता, स्रोत-सत्यापन और metadata quality** अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

एक आदर्श डिजिटल अभिलेख में लेखक का नाम, रचना का शीर्षक, प्रकाशन वर्ष, संस्करण, प्रकाशक, मूल स्रोत और digitization संबंधी जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए।

इससे डिजिटल पाठ केवल पढ़ने योग्य सामग्री नहीं रहता; वह विश्वसनीय शोध-स्रोत बन सकता है।

हिंदी के डिजिटल भविष्य की चुनौती

हिंदी साहित्य का डिजिटल भविष्य अत्यंत संभावनाशील है, लेकिन उसके सामने अनेक चुनौतियाँ भी हैं।

पहली चुनौती है—**व्यापक डिजिटलीकरण का अभाव**। हिंदी की पूरी साहित्यिक विरासत अभी डिजिटल रूप में उपलब्ध नहीं है।

दूसरी चुनौती है—**OCR और पाठ-शुद्धि**। पुराने हिंदी साहित्य को उच्च गुणवत्ता वाले machine-readable text में बदलना अभी भी कठिन कार्य है।

तीसरी चुनौती है—**कॉपीराइट**। अनेक आधुनिक रचनाएँ अभी copyright protection के अंतर्गत हैं।

चौथी चुनौती है—**डिजिटल संरक्षण की दीर्घकालिकता**। आज का file format या storage technology भविष्य में अनिवार्य रूप से उपलब्ध रहे यह निश्चित नहीं है।

पाँचवीं चुनौती है—**डिजिटल असमानता**। सभी पाठकों और शोधकर्ताओं को समान तकनीकी संसाधन उपलब्ध नहीं हैं।

छठी चुनौती है—**भाषाई विविधता का प्रतिनिधित्व**। केवल मानक हिंदी को डिजिटल रूप देना हिंदी की पूरी भाषिक संस्कृति को संरक्षित करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

इन चुनौतियों का समाधान तकनीकी विशेषज्ञों, साहित्यकारों, पुस्तकालयाध्यक्षों, भाषाविदों, इतिहासकारों और विश्वविद्यालयों के सहयोग से ही संभव होगा।

विश्वविद्यालयों और हिंदी विभागों की भूमिका

हिंदी साहित्य के डिजिटल अभिलेखीकरण में विश्वविद्यालयों और हिंदी विभागों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है।

विश्वविद्यालयों में डिजिटल साहित्यिक संग्रह स्थापित किए जा सकते हैं। पुराने साहित्यिक दस्तावेजों का digitization कराया जा सकता है। शोधार्थियों को OCR correction, metadata creation और digital preservation का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

हिंदी विभाग यदि Digital Humanities को अपने पाठ्यक्रम और शोध गतिविधियों से जोड़ते हैं, तो हिंदी साहित्य के अध्ययन की नई दिशाएँ विकसित हो सकती हैं।

भविष्य का हिंदी अध्येता केवल मुद्रित पुस्तक पढ़ने वाला विद्यार्थी नहीं होगा। उसे digital archives, electronic texts, corpus analysis और online databases के साथ काम करना भी आना होगा।

इस प्रकार डिजिटल अभिलेखीकरण हिंदी अध्ययन को तकनीक से जोड़ने के साथ-साथ उसके शोध-क्षेत्र को भी विस्तृत कर सकता है।

डिजिटल अभिलेख और भविष्य की पीढ़ियाँ

किसी भी अभिलेखागार की वास्तविक उपयोगिता उसके वर्तमान उपयोग से अधिक उसके भविष्य के उपयोग में होती है।

आज हम जिस साहित्य को डिजिटल रूप में सुरक्षित करते हैं, संभव है कि आने वाली पीढ़ियाँ उसे ऐसे तरीकों से पढ़ें और समझें जिनकी हम आज कल्पना भी न कर सकें।

वे साहित्यिक corpus का computational analysis कर सकती हैं, artificial intelligence की सहायता से नए प्रकार के literary patterns खोज सकती हैं और विभिन्न भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन कर सकती हैं।

इसलिए आज का डिजिटल अभिलेखीकरण केवल वर्तमान शोध की आवश्यकता नहीं है; यह भविष्य के ज्ञान-संसार के लिए आधारभूत संरचना तैयार करने का कार्य है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य का डिजिटल अभिलेखीकरण आज केवल तकनीकी आवश्यकता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व बन चुका है। साहित्य किसी समाज की स्मृति, अनुभव और चेतना को सुरक्षित रखता है और डिजिटल अभिलेखीकरण उस स्मृति को भविष्य तक पहुँचाने का आधुनिक माध्यम है।

Walter Benjamin के तकनीक और पुनरुत्पादन संबंधी विचार [1], Raymond Williams की संस्कृति संबंधी अवधारणाएँ [2] तथा Jan Assmann की सांस्कृतिक स्मृति की संकल्पना [8] हमें यह समझने में सहायता देती हैं कि साहित्यिक सामग्री का संरक्षण केवल भौतिक वस्तु को बचाना नहीं है। यह उस सांस्कृतिक अर्थ-व्यवस्था को सुरक्षित रखना भी है जिसके भीतर कोई साहित्यिक रचना जन्म लेती है।

डिजिटल तकनीक ने हिंदी साहित्य को एक नई संभावना दी है—**स्थानीय साहित्य को वैश्विक पाठक तक पहुँचाने की संभावना।**

लेकिन डिजिटल अभिलेखीकरण की सफलता केवल इस बात से निर्धारित नहीं होगी कि कितनी पुस्तकें scan की गईं। उसकी वास्तविक सफलता इस बात में होगी कि कितनी साहित्यिक सामग्री विश्वसनीय, searchable, संरक्षित, संदर्भित और आने वाली पीढ़ियों के लिए उपयोगी रूप में उपलब्ध कराई गई।

हिंदी साहित्य के डिजिटल भविष्य के लिए इसलिए एक समन्वित दृष्टि आवश्यक है—**साहित्यिक संरक्षण, तकनीकी दक्षता, भाषाई विविधता, कॉपीराइट जागरूकता, मानवीय संपादन और वैश्विक पहुँच** का समन्वय।

यदि हिंदी साहित्य अपनी विशाल साहित्यिक विरासत को वैज्ञानिक और विश्वसनीय तरीके से डिजिटल रूप में संरक्षित कर सके, तो डिजिटल अभिलेखागार केवल पुस्तकों का

संग्रह नहीं होंगे; वे हिंदी समाज की **सांस्कृतिक स्मृति, भाषाई पहचान और वैश्विक साहित्यिक उपस्थिति के जीवंत केंद्र** बन सकते हैं।

इस अर्थ में डिजिटल अभिलेखीकरण हिंदी साहित्य के अतीत को सुरक्षित करने की प्रक्रिया भर नहीं है। यह हिंदी साहित्य के भविष्य को निर्मित करने की प्रक्रिया भी है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. Benjamin W. The work of art in the age of mechanical reproduction. In: Arendt H, editor. Illuminations. New York: Schocken Books; 1968. p. 217-251.
2. Williams R. Culture. London: Fontana Press; 1981.
3. Internet Archive. About the Internet Archive [Internet]. San Francisco: Internet Archive; [cited 2026 Sep 3].
4. Ministry of Education, Government of India. National Digital Library of India [Internet]. New Delhi: Ministry of Education; [cited 2026 Sep 3].
5. Kirschenbaum MG. Mechanisms: New Media and the Forensic Imagination. Cambridge: MIT Press; 2008.
6. Schuman D, et al. Minimal Computing for Exploring Indian Poetics. Digital Humanities Quarterly. 2022;16(2).
7. UNESCO. Global Roadmap for Multilingualism in the Digital Era: Advancing the Role of Language Technologies. Paris: UNESCO; 2025.
8. Assmann J. Cultural memory and early civilization: Writing, remembrance, and political imagination. Cambridge: Cambridge University Press; 2011.
9. Digital Humanities and Electronic Literature in India: Opportunities, challenges, and future directions. New Review of Hypermedia and Multimedia. 2026;32(2-3):199-224. doi:10.1080/13614568.2026.2643163.

Dr. A. V. Nandaniya
Associate Professor, Shri V. M. Mehta Muni. Arts & Commerce College, Jamnagar.